मूल्य रु. ५-००

श्री स्वामिनारायण

मासिक

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महिने की २१ तारीख • सलंग अंक १८५ • दिसम्बर-२०२२

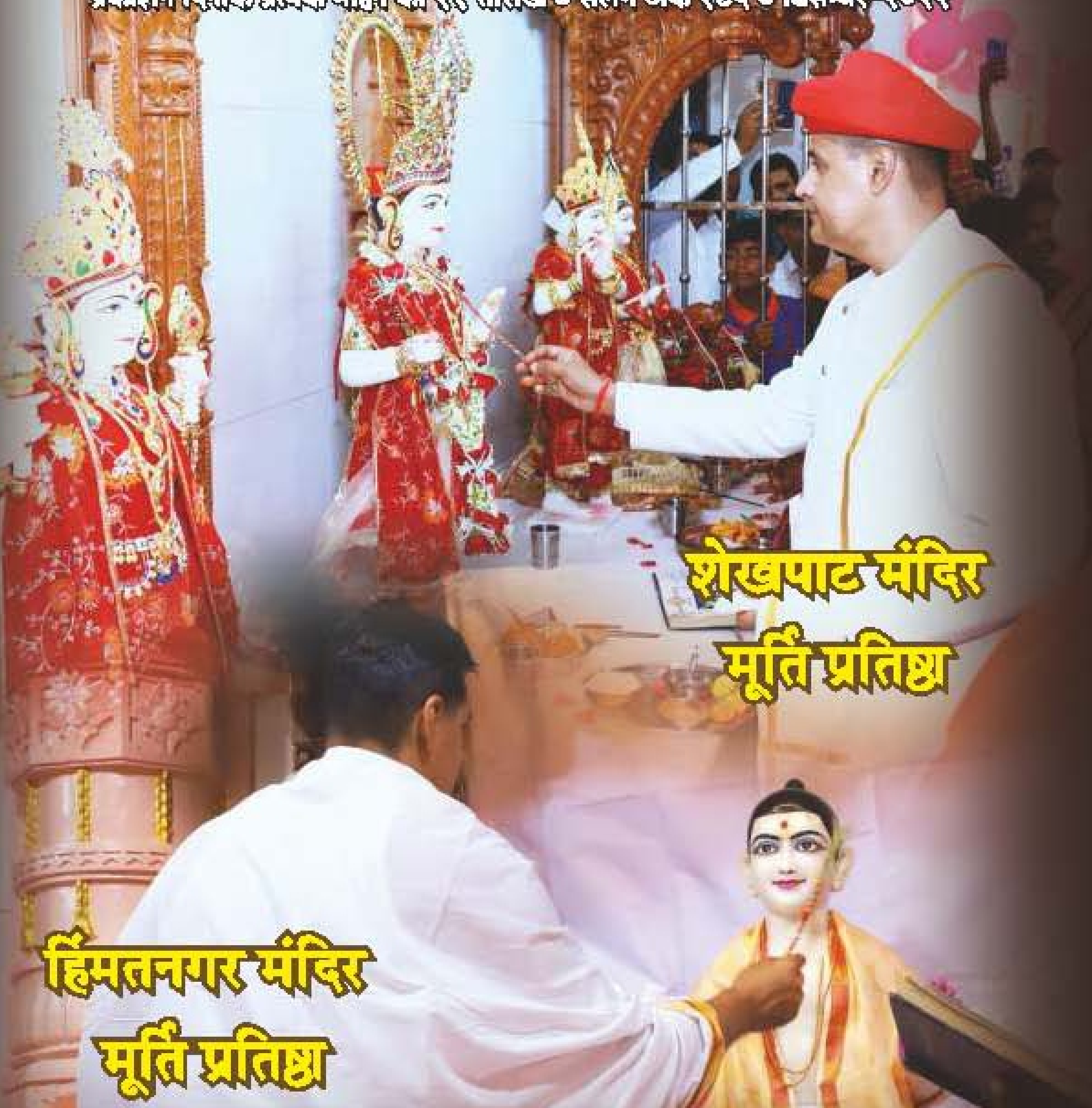

शेखपाट मंदिर मूर्ति प्रतिष्ठा

हिंमतनगर मंदिर मूर्ति प्रतिष्ठा

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

शेखपाट नूतन मंदिर में प्रतिष्ठा के अवसर पर सभा में दर्शन देते तथा स.गु. निष्कुलानंद स्वामी के नये जन्म स्थान का निरीक्षण करते प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

हिंमतनगर नूतन मंदिर में प्रतिष्ठा के समय दर्शन देते प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री ।

धमासणा बहनो के मंदिर में प्रतिष्ठा करते प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

महिजडा नूतन मंदिर में प्रतिष्ठा करते प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

प्रयाग मंदिर के पाटोत्सव अवसर पर ठाकुरजी का अभिषेक ।

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - १६ ● अंक : १८५ ● डिसम्बर-२०२२

अ नु क्र म णि का

०१. अस्मदीयम् ०४

०२. प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, ०५
प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

०३. मूलीधाम की विशेष महिमा ०६

०४. ऊंझा ०९

०५. श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से ११

०६. भक्ति सुधा १३

०७. सत्संग समाचार १६

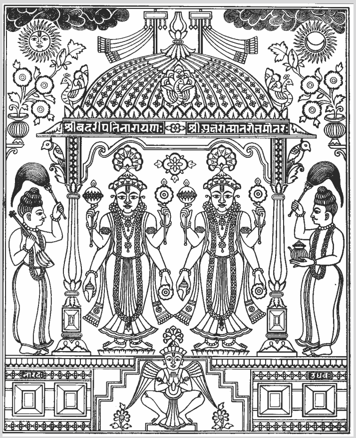

संस्थापक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ ● फोक्स :
२७४१९५९७
www.swaminarayanmuseum.com

श्री नरनारायणेदव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी
(महंत स्वामी)
मो. ९३१३७१९२३२

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
मो. ९३१३७०६०९५
magazine@swaminarayan.in
www.swaminarayan.info
पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● प्रति कोपी ५-००

अस्मदीयम्

भगवान की असीम करुणा के कारण जीवात्मा को मानव शरीर प्राप्त होती है । तभी सत्संग का योग बनता है । सत्पुरुषो के समागम रुपी सत्संग द्वारा जीव अपने आत्मा के कल्याण हेतु मार्ग अर्थात् भक्ति मार्ग में प्रयाण करना जिसके कारण भगवान के स्वरुप का ज्ञान प्राप्त करके मोक्ष प्राप्त करने के लिये भगवान की मूर्ति को हमेशा स्मरण करते रहे । तो अक्षरधाम की प्राप्ति होगी । महाराज तो ऐसा कहते है कि हम बडे बडे समैया तथा यज्ञ करते है । इसमें कोई जीव भी भाग ले ले । और उसे अंत समय इस दृश्य का स्मरण हो जाये तो उसे अक्षरधाम की प्राप्ति होती है । अक्षरमुक्ति के पंक्ति में मिलकर महा सुखी हो जाता है । किसी भी प्रकार से भगवान की मूर्ति का स्मरण अंतकाल में आ जाये । यहाँ पर पदार्थो तथा संसार का मान सम्मान याद आता ही है । ऐसा नहीं होना चाहिए । इसमें अपने आत्मा का कल्याण है । ऐसा दृढ निश्चय करके भगवान से इस तरह की माँग करना चाहिए ।

संपादकश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कार्यक्रम की रुपरेखा (नवम्बर-२०२२)

२ श्री स्वामिनारायण मंदिर जेतलपुर में पारायण के अवसर और महिजडा (जेतलपुर) में मूर्ति प्रतिष्ठा अपने कर कमलो द्वारा किये।

१० श्री स्वामिनारायण मंदिर सुरेन्द्रनगर पाटोत्सव पर पधारना।

१३ श्री स्वामिनारायण मंदिर हिम्मतनगर नूतन शिखरबद्ध मंदिर में मूर्ति प्रातण प्रतिष्ठा अपने करकमलो द्वारा पूर्ण किये।

१४ श्री स्वामिनारायण मंदिर महादेवपुरा (छाला) मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा अपने करकमलो द्वारा किये।

२४ श्री स्वामिनारायण मंदिर धमासणा भाईयो के मंदिर का पाँचवा पाटोत्सव और बहनो के मंदिर में पुनः प्रतिष्ठा में पदारना।

२९ श्री स्वामिनारायण मंदिर कलोल पंचवटी पंचामृत पाटोत्सव के अवसर पर पधारना।

प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(नवम्बर-२०२२)

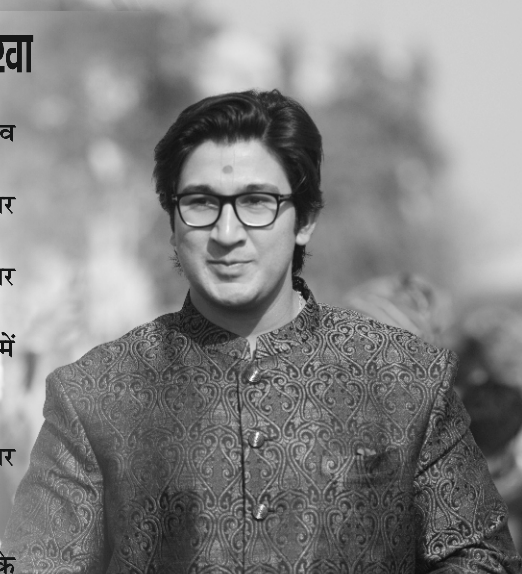

१ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की अन्कूट आर्ती करकने के लिये पधारे।

७ श्री स्वामिनारायण मंदिर सुरेन्द्रनगर पाटोत्सव के अवसर पर आयोजित पारायण में पधारना।

८ श्री स्वामिनारायण मंदिर हिम्मनगर मूर्ति प्रतिष्ठा के अवसर पर पधारना।

१४ श्री स्वामिनारायण मंदिर मूली ''उत्सव'' में आयोजित मीटींग में स्वयं अध्यक्षकता करना।

१९ बळोल (भाल) कथा पारायण के अवसर पर पधारना।

२० श्री स्वामिनारायण मंदिर धमासणा पाटोत्सव के अवसर पर पधारना।

२६ हलवद श्री स्वामिनारायण मंदिर शाकोत्सव प्रसंग पर पधारना।

३० श्री स्वामिनारायण मंदिर कलोल पंचवटी पंचामृत पाटोत्सव के अवसर पर पधारना।

मूलीधाम की विशेष महिमा

लेखक : गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापूनगर)

सर्वावतारी सर्वोपरि भगवान श्री स्वामिनारायण पृथ्वी पर प्रगट होकर अपने आश्रितो के कल्याण के लिये तीन गूढ रहस्य उसमें से पहला उपासना की शुद्धि, मंदिर बनाना तथा कृष्ण स्वरुप की प्रतिष्ठाक रना । इस संकल्प को पूर्ण करने के लिये उस समय कोई अद्यतन तकनीक नही थी । शीघ्रता वाले वाहन की सुविधा नही थी । सामान पत्थर लाने के लिये बैलगाडी का उपयोग किया जाता था । उस समय मात्र सप्त वर्ष के अन्दर नव मंदिरो के निर्माण की तथा उनमें प्रतिष्ठा भी किये । नव मंदिरो में दूसरे क्रम पर आने वाला मंदिर अहमदाबद देश का मूली मंदिर है । जिस मंदिर का २०० वाँ वर्ष पूर्ण होने पर श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के अध्यक्ष पद पर आगामी ता. २०-१-२०२३ तक उल्लास पूर्वक ''उत्सव'' मनाया जायेगा । मूली श्री राधाकृष्णदेव की संक्षिप्त महिमा का गान करके पवित्र हो जाये ।

मूली मंदिर में स्वंय श्रीहरिने अपने हाथो द्वारा श्री राधाकृष्णदेव की प्रतिष्ठा किये । जिसका उदाहरण कई शास्त्रो में मिलता है । जिस का लेख आगे के श्री स्वामिनारायण मासिक में प्रकाशित हो चुका है । इस कारण से इस लेख में विस्तार नही करके मात्र सत्संगिभूषण ग्रन्थ का आधार लिया गया है ।

वि.सं. १८७८ में फाल्गुन सुद तीज के दिन श्रीहरिने अहमदाबाद में श्री नरनारायणदेव की प्रतिष्ठा किये थे। इस अवसर पर भक्तलोग दर्शन करने आये थे । जिस में मूली का राजा रामाभाई भी आये थे । सप्तमी के दिन महासभा में उत्तम सिंहासन के उपर श्रीहरि विराजे थे । उस सभा में रामाभाई राजा मूली के मंत्री तथा मूली के लोग खडे हो गये थे । और प्रणाम करके विनयपूर्वक श्रीहरि से कहे हे भगवन है सत्यपति ! आप हमारी एक प्रार्थना सुनिये । मेरे मन में तथा हमारे मंत्रियो के मन में तथा सभी नगर वासियो के हृदय में ऐसा है कि हमारे यहाँ एक मंदिर का निर्माण हो । हे सर्वेश ! आप हमारी मनोकामना पूर्ण करे । श्री नारायणमुनि प्रसन्न होकर कहे । बहुत अच्छा, भगवान का मंदिर बनाये । इस तरह

रामाभाई राजा को कहे। श्रीहरि को मुलीपुर के प्रति अधिक प्रेम होने के कारण सर्वगुण सम्पन्न, मंदिर बनाने मे निपुण और सभा में आगे बैठने वाले ऐसे संत ब्रह्मानंद मुनि ने वास्तुशास्त्र के अनुसार कृष्ण मंदिर बनाने का आदेस दिये।

ब्रह्मानंद मुनि के पूरे मार्गदर्शन में शिल्पशास्त्र में निपुण शिल्पीयो द्वारा पत्थर से उत्तम मंदिर निर्माण तथा माघ सुदी एकम के दिन श्रीहरि मूली पुर गये। गगनचुम्बी शिखर वाला, अधिक विशाल, विमानकार, ऐसा सुंदर मंदिर देखकर श्रीहरि अति प्रसन्न हुए। और अपने गले का हार निकालकर ब्रह्ममुनि को दिये। श्रीहरिने ब्रह्ममुनि, रामाभाई राजा और शिल्पीयो की प्रशंसा किये। अंग देवता और प्रधान देवता की प्रसन्नता के लिये मुख्य विधिद्वारा श्रीहरिने सभी प्रतिष्ठा सम्बन्धी विधि कराके मूर्तियो में प्राण प्रतिष्ठा कर्म कराके।

ततोलग्ने शुभेदेवं राधाकृष्ण प्रतिष्ठित ।
मध्यमे मंदिर तस्य दक्षिणे प्रतिमां स्वकाम ॥७॥
तधामे मंदिरे चासौ रणछोडत्रिविक्रमौ ।
अस्थापच्चधर्मात्मा शास्त्रोक्त विधिना हरिः ॥८॥
(स.भू.अंश-३ - अध्याय-५४)

माघ सुद पंचमी के दिन (सं १८७९) को शुभ मुहूर्त में मध्य मंदिर में राधिका सहित श्रीकृष्ण की प्रतिष्ठा करके और कृष्ण के दाहिने तरफ अपना हरिकृष्ण मूर्ति की स्थापना किये। (७) मध्य मंदिर के वाये तरफ मंदिर में धर्मात्मा श्रीहरिने शास्त्रोक्त विधिसे रणछोड त्रिकमराय की स्थापना किये।(८)

श्री शतानंदमुनिने सत्संगिजीवन प्र-४ में अ.-४४ में भी मूली में श्रीहरि राधाकृष्णदेव को स्थापित किये। इसका उल्लेख संस्कृत श्लोक नं. ३८ और ३९ में किया गया है।

दोनो समय की मूर्ति प्रतिष्ठा के समय पुष्पांजलि देकर मुहूर्त तक श्रीहरि मूर्तियो के सामने देखे। उसमें से तेजोमय पुंज निकला। उस समय लोगो ने उसका दर्शन किये। तथा लोग विस्मय में आ गये। और अपने को धन्य मानने लगे।

राधाकृष्णदेव की मूर्तियो का इतिहास : मुलीपुर में श्रीहरि द्वारा स्थापित राधाकृष्णदेव मूर्ति का इतिहास अनोखा है। श्रीहरि जब लोया में शातोसव किये। उसी समय गढपुर से श्रीराधाकृष्णदेव की मूर्ति मंगाये थे .संत लोग उसे लोया लाये थे। अन्यन्त सुंदर मूर्ति को देखकर श्रीहरि खुश हुए। श्रीहरिने मूर्ति का अभिषेक किये। वस्त्र पहनाये। मूर्ति सुंदर लगने के कारण श्रीहरि मूर्ति को देरतक भेटे (आलिंगन) किये। श्रीहरि ने बैगन की सब्जी को अति सुंदर स्वाद वाला बनाये थे। इससे झालावाड की ४० रसोई पंजीकृत हो गई। प्रति श्रीहरि स्वयं शाक बनाते थे। शाक बनाते-बनाते राधाकृष्ण का आलिंगन करते थे। हल्दी वाले हाथ भेट तेजोमय मूर्ति भी आलिंगन के लिये हाथ आगे करती थी। इस प्रकार दो महीने तक शाकोत्सव चलता रहा। तो भी कुछ रसोई बाकी ही रही। सभी भक्त अपने गाँव जाने के लिये तैयार हो गये। उस समय मूली के राजा रामाभाई तथा दूसरे भक्त श्रीहरि से रजा लेने आये। श्रीहरि को प्रणाम करके बोले है महाराज। आप मूली में मंदिर बनाने का संकल्प किये है। तो मंदिर के लिये यह प्रसादीवाली मूर्ति आप दे दे।

श्रीहरि बोले, मंदिर तो अभी बन रहा है। तब तक उसकी पूजा तो करना पडेगा। इसे कहा रखेगे। राजनेक हा, महाराज ! अभी हमारे दरबार में रख दे। और घेला जोशी पूजा करेगे। श्रीहरि की आज्ञा पाकर उस मूर्ति को रथपर रखकर मूली के भक्त लाये। दरबार के एक कमरे में रखा गया। सभी प्रेम से पूजा करने लगे। घेला जोशी वस्त्र तथा थाल लगाते थे। एकबार विलम्ब हो जाने पर मूर्ति बोली "शीघ्रता से थाल लगाओ, हमें भूख लगी है।" एकबार जागरण होने के कारण लोग बिलम्ब से उठे तो मूर्ति ने कहा कि आप सभी लोग क्या सोये है ? हारी सेवा-पूजा के लिये देर हो रही है। एकबार गाँव में अमरुद बेचने वाला आया। मूर्ति बोली गाँव में अमरुद बिक रहा है। हमारे लिये लाओ। इस प्रकार राधाकृष्णद प्रत्यक्ष माँग कर खाते थे। इस प्रकार श्री राधाकृष्णदेव की मूर्ति को शाकोत्सव के समय स्वयं श्रीहरिने दो मास तक पूजा सेवा दिये थे। राधाकृष्ण देव को श्रीहरिने दो मास तक आरती श्रृंगार तथा थाल किये थे।

ऐसे श्रीहरि के प्रसादी के महाचमत्कारी राधाकृष्णदेव को मंदिर में प्रतिष्ठित करने के लिये मंदिर निर्माण कार्य के लिये केवल झालावाडी नही बल्की जतवाड, मच्छु का किनारा, भाल, हालार तथा मूली देश के सभी हरिभक्त मंदिर की नीव से लेकर मूर्ति प्रतिष्ठा तक मंदिर में सर्वस्व दिये है। श्रीहरि तथा ब्रह्मानंद स्वामी की कृपा प्राप्त किये। इन सभी को अंत समय लाने के लिये आश्वासन दिये थे।

महिमा : प्रतिष्ठोत्सव की सभा में श्रीहरि सभी की तरफ देखते हुए बोले हे भक्तजनो ! यह मुलीपुरी श्रीकृष्ण

भगवान को सभी प्रकार से प्रिय है । श्रीकृष्ण भगवान मथुरापुरी से आकर तीन वर्ष तक इस पुरी में निवास किये थे । लेकिन शत्रुओ के उपर उपद्रव के कारण भगवान ने विश्वकर्मा द्वारा समुद्र में द्वारिकापुरी का निर्माण करवाये । भगवान श्रीकृष्ण यादवो की रक्षा के लिये द्वारिका चले गये । इस मुलीपुर में अलर्कवाव है । इसमें माधव भगवान अपने भक्तो के साथ जलक्रीडा किये थे । श्रीहरि इस वाव की महिमा बताये कि हे भक्तजनो ! मुलीपुर में स्थापित राधाकृष्ण का जो दर्शन करेगा । उसके सभी मनोरतपूर्ण होगे । एकादशी अथवा प्रति पुनम के दिन राधाकृष्ण का जो नियम से दर्शन करेगा । वह जीवित अक्षरमुक्त सम हो जायेगा । इस पुरी में हमारे आश्रित प्रति वर्, वैशाख सुद बारस अथवा कार्तिक पूर्णिमा को राधाकृष्णदेव का प्रयत्नपूर्वक दर्शन करे । माध मास की पंचमी (वसंत पंचमी) के दिन श्रीराधाकृष्णदेव का दर्शन विशेषकर करे । यथा शक्ति साधु-ब्राह्मणो को दान दे । वसंत पंचमी के दिन दर्शन करने पर दस गुना फल मिलती है । हे भक्तजनो । इस राधाकृष्णदेव के दर्शन करने से द्वारिका यात्रा सिद्ध होगी । क्योकि श्रीकृष्ण के रहने के कारण मूलीपुरी भी द्वारिका के समान हो गयी है ।

श्रीहरि अलर्क वाव में स्नान करने के लिये नीचे जाकर अपने चरणो को पानी में रखते थे । उस समय अडसठ नही एक सो अधिक तीर्थ एकत्र होकर वहाँ निवास करते थे । भोगवती गंगा में भी श्रीहरि स्नान करते थे । डूबकी लगाते थे । एक-एक घंटे तक जलक्रिडा किया करते थे । श्रीहरि बोले है कि हमारे प्रसंग पर (भोगवती) भोगवो में जो स्नान करेगा । उसे सभी तीर्थो का फल मिलेगा । इस जगह पर बडा जनसमुदाय आकर परम मोक्ष पदको प्राप्त करेगा । ऐसी ये महान तीर्थ भूमि है । मूली धाम को हमने बडा धाम के दर्शन मात्र से दिल के पाप नष्ट हो जाते है । संसार में सभी तीर्थ कहे जाते है । उसमें मूली जैसा तीर्थ जैसा कोई तीर्थ मुझे अच्छा नही लगता है । मेरे-चरण स्पर्श होने के कारण यह तीर्थ मनुष्य के करोडो जन्म के पाप का क्षय करेगा । क्योकि यहाँ पर मैने जिस देव की स्थापना किया हू । वे अधिक चमत्कारी है । जो लोग इस देव को भेट और थाल चढायेगे । उसे काल चक्र के क्लेश हैरान नही करेगा । इस व्रत धारण करके मूर्ति का ध्यान जो करेगा । वह जीवात्मा मुक्ति प्राप्त करेगा । यह तीर्थ सभी तीर्थो से अधिक सुख देने वाला है । इस धाम के दो समैया निर्धारित किये गये है । एक गोकुल अष्टमी (जन्माष्टमी) और दूसरा वसंत पंचमी इन दो समैया में जो लोग भाग लेगे वही हरिभक्त कहे जायेगे । और हमारे सच्चे आश्रित होगे । वे सत्संगि हमारे परम पद को प्राप्त करेगे । श्रीहरि अपने मुख से मूलीधाम की अधिक महिमा कहे है । जो लोग इसे झूठा मानेगे । वह लोग यमपुरी में जायेगे ।

श्रीहरि द्वारा बनाये गये । ऐसे महामंदिरो में श्रीहरि द्वारा नियम किये गये । धर्मवंशी आचार्य की परम्परा मे विद्यमान आचार्यश्री तथा पूरे धर्मकुल परिवार के सानिध्य में जब ऐसा ''उत्सव'' होता हो । इस उत्सव में अमृत का स्वाद लेने के बाद भी भक्तजन श्री नरनारायणदेव या श्री राधाकृष्णदेव साथ जुडा नही है । वैसे गुरुकुल प्राईवेट संस्थाये उत्सव का दर्शन करने या सहभागी बनने मे आ जाते है । वह मठ्ठा (छाश) पीने के समान है । ऐसे भक्त कितने भी बड़के कहे जाये । वे लोग आराध्यदेव श्रीहरि और श्रीहरि के अपर स्वरुप ऐसे धर्मवंशी आचार्यश्री की निष्ठा ही नही है । देश विभाग के लेख में सम्प्रदाय के संविधान का ज्ञान नही है । वर्तमान समय में अमदाबाद मंदिर में प.पू. महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आज्ञा से देश विभाग का लेख निःशुल्क (फ्री) में मिलता है । आडियो बुक में भी मिलता है । इस लिये पढने, सुनने तथा मनन करने की आज्ञा डालेगे । तो भेडवाली भेड से दूर रहेगे । माने जैसे आन्तरिकशत्रु ईधर् उधर ले जाने के लिये वाध्य करते है । श्रीहरि के बल से इन शत्रुओ पर विजय मिल सकती है । इस प्रकार आप सहजानंदी शेर बन सकते है । सत्पुरुषी संविधान का ध्यान रखते है । शेष सत्पुरुषो की महिमा का गायन करके जेब खाली करवा लेते है । उन्हे पहचाने यह अपने तथा सम्प्रदाय के लाभ में सहायक होगा ।

नये महंत स्वामीकी नियुक्ति

पेथापुर : श्री स्वामिनारायण मंदिर के नये महंत स्वामी स.गु. स्वामी अजयप्रकाशदासजी गुरु स.गु. स्वामी जयप्रकाशदासजी (मूली मंदिर) में नियुक्त किया गया है ।

उनावा : श्री स्वामिनारायण मंदिर के उनावा के नये महंत स्वामी देवप्रकाशदासजी गुरु स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी और् स.गु. महंत शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (गांधीनगर) में नियुक्त किया गया है ।

अहमदाबाद शहर के समीप श्री स्वामिनारायण भगवान के प्रसादी के गाँव

ऊंझा

संकलन : प्रफुल खरसाणी

- अहमदाबाद कालुपुर मंदिर से सडक द्वारा २ घंटे १३ मिनट
- अमहादाबाद विमान अड्डे से १ घंटा ५० मिनट

उँझा मंदरि : अहमदाबाद से आबु रेलवे लाईन जाती है। मेहसाणा से आगे ऊँझा रेल्वे स्टेशन आथा है। इसके द्वारा ऊँझा जा सकते है। ऊँझा रलवे स्टेशन से ऊँझा गाँव लगभग २ कीलोमीटर दूर है। अहमदाबाद से एस.टी. मार्ग से ऊँझा जा सकते है। ऊँझा जीरा तथा सौफ की बडी मंडी है। यह गाँव ता. सिध्धपुर जिला मेहसाणा मैं है।

यहाँ पर हरिमंदिर है। मंदिर दक्षिण द्वार वाला है। यहाँ पर सहजानंद की मूर्ति स्थापित है। यहाँ का मंदिर संवत १९२५ के वर्ष मे शास्त्री स्वामी चैतन्यदासजी ने बनवाया था। मंदिर बनते समय द्वेष करने वाले अधिक थे। स्वामीने पटेल रतनचंद बारेया को बुलाकर सहायता लेकर मंदिर बनवाये। स्वामी ने रतनचंद को आशीर्वाद दिये के आप के घर के लोग अच्छे सत्संगी होगे। वर्तमान में ये लोग अच्छे सत्संगी है। इसके बाद यहाँ का मंदिर नये रुप में स्वामी कृष्णवल्लभदासजी कोठारी भक्तिभाई तथा कोठारी विठ्ठलभाई के सहयोग से बनाये। और प्राण प्रतिष्ठा संवत १९९७ ज्येष्ठ वद-४ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री देवेन्द्रप्रसादजी महारजाश्री के करकमलो द्वारा किया गया था।

यहाँ पर बहनो का भी मंदिर है। वहाँ पर श्री घनश्याम महाराज की मूर्ति है। उसकी प्राण प्रतिष्ठा २०३२ मागसर सुद-८ के दिन प.पू.ध.धु. १००८ आचार्य श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के करमकलो द्वारा किया गया। वडताल के प.पू.ध.धु. १००८ आचार्य श्री नरेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री भी प्रतिष्ठा के शुभ अवसर पर आऱती किये थे।

यहाँ पर कई बार श्रीहरि आकर कई कल्याणकारी लीलाचरित्र करके इस धरा को पवित्र किये है। गाँव के ईशान दिशा में एक तालाब है। वहाँ पर महाराजने अपने दाहिने चरण को तालाब स्पर्श करके शैवाल समाप्त किये। तथा पूर्व दिशा में बरगद का पेड है। वहाँ पर श्रीहरि झूला झूले है। श्रीहरि के चरण स्पर्श से यह धरा पवित्र हुई है।

उँझा में श्रीहरि : श्रीहरि को सिद्धपुर में समैया करना था। उसका निमंत्रण देश-देशान्तर में भेजे। सभी साधु और सत्संगी ऊँझा आये। महाराज सभी साधुओ से मिले। गाँव के बाहर बरगद के नीचे गद्दा लगाकर बैठ गये। महाराजने कहा कि वर्षो वर्ष मंडली बनानी पडती है। इस लिये दो लोग साथ आये। तो जगह को वितरण करे। आत्मानंद स्वामी हाथ जोडकर बोले कि देश तो अधिक दिये। लेकिन अभीतक आप भोजन की माँग नही किये। महाराज हँस पडे। सभी ने भोजन किया। महाराज अपने सभी साधुओ को खिलाकर सिद्धपुर के रास्ते घोडी पर चल कर चले गये।

उँझा की उदेकुंवरबाई : ऊँझा में उदेकुंवर नाम की एक ब्राह्मण महिला थी। उनको महाराज दर्शन देकर बोले कि आप को फलहार पर रहना चाहिए। इसके बाद वह महिला

प्रतिदिन एख सिंघाडा खाकर रहने लगी । और श्रीजी महाराज प्रतिदिन उन्दे दर्शन देते थे ।

ऊँझा के तालाब की शैवाल को श्रीहरिने समाप्त किया : एकबार श्रीजी महाराज ऊँझा गाँव में बरगद के वृक्ष के नीचे बैठे थे । उस समय घोडे को प्यास लगी थी । महाराज बोले कि ''यह बडा तालाब है इस में घोडो को पानी पीला दो'' । सभी घोडो को एक साथ लेकर वहाँ पर गये । उन्होने पानी के उपर एकदाया शैवाल लगा दिखाई दिया । पानी नही दिखाई दे रहा था । घोडे प्यासे पीछे आ गये । महाराज बोले तालाब तो बडा है । उसमें शैवाल अधिक जमा है । वहाँ पर गाँव के लोग भी बैठे थे । उन्होने कहा ''यह तालाब किसी के श्राप से श्रापित है । इस कारण से शैवाल हमेशा भरा रहता है । तालाब तो अधिक बड़ा है । बारह महीने पानी की कमी नही रहे । तथा पानी पीने योग्य भी नही रहता है । महाराज माणकी पर चढकर तालाब पर गये । तथा गाँव के अच्छे लोग भी देखने गये । महाराज घोडी को तालाब के अन्दर ले गये । उनके चरणाविंद से शैवाल आधे घंटे में समाप्त हो गया । गाँव के लोग उस प्रताप को देखकर आये । ''ये स्वामिनारायण साक्षात् पुरुषोत्तम भगवान है ।'' इस प्रकार गाँव के लोग श्रीफल लेकर आने लगा । महाराज के सामने नासिल का टेकरा हो गया । उसको प्रसाद के रुप में ग्रामीणो को बाँट दीया गया । ऐसा चमत्कार दिखाकर घोडे पर बैठकर महाराज वहाँ से निकल गये ।

महाराजने ऊँझा में समैया किये थे ।

ऊँझा में श्रीहरिने स.गु. महानुभावानंद स्वामी को दीक्षा दिये ।

श्रीहरि के अद्‌भुत लीलाओ का वर्णन ''हरिकृष्ण लीलामृत'' नामक ग्रंथ के लेखक स.गु.महानुभावानंद स्वामी थे । ऐसे मुक्त पुरुष को ऊँझा गाँव की पवित्र भूमि पर दीक्षा देकर पवित्र और प्रभावशाली किये थे ।

भगवान श्री स्वामिनारायण विरमगाम आदि गाँवो को धुमते हुए । ऊँझा गाँव में पधारे । उस प्रकरण का वर्णन ''श्री घनश्याम लीलामृत सागर'' में वर्णित है ।

एम करता थका सुखकारी ॥ गाम उंझे पधार्या मुरारी ॥
ते गामथी उत्तर देश ॥ सरोवर सुंदर छे एश ॥३५॥
ते सरोवर तीरे समक्ष ॥ मोटुं छे एक वडनुं वृक्ष ॥
तेना तळे कर्यो मुकाम ॥ निज पार्षदे जुक्त ते काम ॥३६॥
नथुराम विप्र छे पावन ॥ वैश्य मुरीर निर्मळमन ॥
जेकुंवरबा ब्राह्मण जात ॥ ए आदि जे उंझामां विख्यात ॥ ३७॥
ते सरवेए जाण्युं छे मन ॥ अत्रे आव्या छे भगवान ॥
पछे गया सरोवर तीर ॥ ज्यां विराज्या छे श्री बलवीर ॥३८॥

उपर वर्णन के आधार पर भगवान श्री स्वामिनारायण विरमगाम आदि गाँवो का विचरण करते हुए ऊंझा गाँव में आये और तालाब के किनारे सुंदर बरगद के नीचे बैठाये । सभी भक्त जैसे नफूदास विप्र तथा जेकुंवरबा आदि सभी लोग तालाब के पास श्रीहरि से मिलने गये । सभी हरिभक्त महाराज को अपने घर पधारने का आग्रह किये थे । समैया भी किये थे । सिद्धपुर जाते समय रास्ते में ग्वालो को भी प्रताप दिखाये थे । इस प्रकार श्रीजी महाराज ऊँझा गाँव की प्रभावशाली भूमि को अपने चरणो से स्पर्श करके पावन किये । इसी कारण से ऊँझा गाँव आज भी सत्संग से पूर्ण है ।

(विशेष : इस प्रकार आप श्री नरनारायणदेव देश के अर्न्तगत मंदिर का इतिहास और फोटोग्राफ भेज सकते है ।)

श्री स्वामिनारायण म्युजियम

श्री स्वामिनारायण म्युजियम के द्वार से

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में पंजीकृत श्री महाविष्णुयाग की सूची

सितम्बर-२०२२

दि. ०४-०९-२०२२	प.भ. योगेशभाई मगनभाई पटेल तथा जनार्दनभाई मगनभाई पटेल - कलोल
दि. ०५-०९-२०२२	प.भ. जयदीपभाई शामजीभाई मालवीया - ठक्करनगर - अहमदाबाद
दि. ०६-०९-२०२२	गं.स्व. गौरीबेन अमृतभाई पटेल - मणीनगर - ह. आभा, साजन तथा किरात
दि. ११-०९-२०२२	अ.नि. कनुभाई छगनभाई मकवाणा - ह. निमेषभाई तथा परेशभाई
दि. १२-०९-२०२२	प.भ. अभय गोविंदभाई पटेल - थलतेज - ह. गोविंदभाई देवशीभाई पटेल - पीठवडी
दि. २५-०९-२०२२	प.भ. उर्मिलभाई हिंमतभाई पूजारा - आंबावाडी - ह. पूजाबेन पूजारा

अक्टूबर-२०२२

दि. ०६-१०-२०२२	प.भ. संजय रवजीभाई तथा ध.प. चेतना राबडिया - लंदन
दि. ०७-१०-२०२२	प.भ. मनजी शीवजी हिराणी - यु.एस.ए.
दि. १६-१०-२०२२	प.भ. देव हितेषकुमार कांतिलाल पटेल - हिंतमनगर
दि. १६-१०-२०२२	प.भ. कांतिभाई मोहनभाई पटेल - पादरा
दि. १६-१०-२०२२	प.भ. शामजीभाई लालजीभाई पटेल - रणुं पादरा
दि. २०-१०-२०२२	प.भ. ज्योत्सनाबेन दिनेशभाई सी. पटेल - लंदन - ह. जय डी. पटेल
दि. २३-१०-२०२२	प.पू. बड़े महाराजश्री के हाथो द्वारा लक्ष्मीपूजन - यजमान अ.नि. भास्करभाई जयदेव ब्रह्मभट्ट - ह. राजदीपभाई, सर्व तथा सत्व
दि. २४-१०-२०२२	हाल नं. १ में स्थापित प्रसादी के श्री हनुमानजी की सामूहिक पूजा
दि. २७-१०-२०२२	प.भ. जयंतिभाई बबलदास पटेल - मोखासणवाले - हाल यु.एस.एस.
दि. २८-१०-२०२२	प.भ.श्री कार्तिककुमार जसुभाई पटेल - उवारसदवाले - राणीप
दि. ३१-१०-२०२२	प.भ.श्री डॉ. कांतिभाई पटेल - न्युजीलैण्ड

नवम्बर-२०२२

दि. ०२-११-२०२२	प.भ.श्री परसोतमभाई त्रिभोवनदास पटेल (भाउपुरा)
दि. ०४-११-२०२२	प.भ.श्री अक्षर कौशिककुमार चौधरी - ईश्वरपुरा - प्रे. यज्ञप्रकाश स्वामी महंतश्री कलोल पंचवटी
दि. ०५-११-२०२२	श्री भक्ति मंडल स्वामिनारायण मंदिर - नवा वाडज
दि. ०६-११-२०२२	प.भ.श्री मधुबेन रमेशभाई पटेल - वडुवाले - वर्त - यु.एस.ए. - वर्त अश्विनभाई और बिरेनभाई
दि. १०-११-२०२२	प.भ.श्री जयमीनकुमार अरविंदभाई पटेल - कलोल
दि. १३-११-२०२२	प.भ.श्री जितेन्द्रभाई बाबुभाई पटेल - मेमनगर
दि. १९-११-२०२२	प.भ.श्री पूजा नीलकंठ धानाणी - पालडी-जीवराजपार्क
दि. २०-११-२०२२	प.भ.श्री कृष्णभाई रेवाभाई पटेल -कलोल - वर्त - स्वातिल पटेल
दि. २४-११-२०२२	प.भ.श्री रेखाबेन राजूभाई - मोरबी तथा प्रज्ञाबेन - ओलपाड - प्रेरणादास स्वामी - भात
दि. २५-११-२०२२	प.भ.श्री प्रविणाबेन हसमुखलाल भावसार - वडनगरवाले - अहमदाबाद
दि. २६-११-२०२२	प.भ.श्री धर्मिष्ठाबेन नरेन्द्रकुमार पटेल - नवरंगपुरा - अहमदाबाद
दि. २७-११-२०२२	प.भ.श्री मीठालाल छोटालाल भावसार - नवावाडज - अहमदाबाद -वर्त. - तेजस भावसार

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में भेट देनेवालों की सूची

सितम्बर-२०२२

रु. १,५१,०००/-	प.भ. केशवलाल मगनलाल पटेल परिवार - बाकरोल (कणभा)
रु. १,०१,०००/-	प.भ.अ.नि. विक्रमभाई ईश्वरभाई शंकरभाई पटेल - उनावा - ह. जीगर विक्रमभाई तथा भाविक संजयभाई तथा पूरा रामदासबापा परिवार - उनावा
रु. ५१,०००/-	प.भ. शिल्पाबेन नवीनभाई पटेल - राजपुर - ह. प्रिया, मोनित तथा लीलाबेन
रु. ५१,०००/-	प.भ. भावनाबेन डी. महेता - अहमदाबाद
रु. ५१,०००/-	नीलकंठ लैण्डस्केप एसोसियेट - उनावा - ह. भाविक पटेल, जीगर पटेल, फेनिल पटेल तथा पूरा रामदासबापा परिवार - उनावा
रु. ५१,०००/-	हरिकृष्ण नर्सरी एन्ड प्लानटेशन - उनावा - ह. भाविक पटेल, जीगर पटेल, फेनील पटेल तथा पूरा रामदासबापा परिवार - उनावा

अक्टूबर-२०२२

रु. ६,२४,०५०/-	प.पू. बड़े महाराजश्री (तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री) के चरणो में भेट
रु. २,२६,०००/-	प.भ.श्री डाह्याभाई नारणभाई पटेल - माणसा वर्त. - अहमदाबाद
रु. २,२६,०००/-	प.भ.श्री अरविंदभाई रवजीभाई दोंगा - बापुनगर
रु. २,२६,०००/-	प.भ.अ.नि. कालीदास नरसिंहदास पटेल परिवार - गुगुलापुरवाले
रु. १,११,१११/-	प.भ.श्री सोनी जयेन्द्रकुमार चुनीलाल - पलियडवाले - अहमदाबाद
रु. १,०१,०००/-	प.भ.श्री नारण प्रेमजी मेघजी पटेल
रु. १,०१,०००/-	प.भ.श्री जनककुमार जी. पटेल - लवारपुर - अहमदाबाद
रु. १,००,१११/-	प.भ.श्री हसमुखभाई डी. सोनी, बिपीनभाई सोनी - माणसा
रु. ५१,०००/-	प.भ.श्री कुवरजी अरजण केराई
रु. ५१,०००/-	प.भ.श्री भीखुभाई एस. पटेल - कालीदाम - अहमदाबाद
रु. ५१,०००/-	प.भ.श्री प्रकाशभाई बलदेवदास पटेल - अमेरिका - अहमदाबाद
रु. ५१,०००/-	प.भ.श्री शिल्पाबेन नवीनभाई पटेल - राजपुरवाले - अमेरिका
रु. ५१,०००/-	प.भ.श्री रेखाबेन चंद्रेशभाई पटेल - अमेरिका - बोस्टन
रु. ५१,०००/-	प.भ.श्री रमीलाबेन अरविंदभाई के. पटेल - डांगरवावाले - बोस्टन
रु. ५१,०००/-	प.भ.श्री कल्याण रामजी जेसाणी बलदिया - वर्त. यु.के.
रु. ५१,०००/-	प.भ.श्री कनुभाई आर. पटेल (चोकसी) अमेरिका-न्युजर्सी
रु. ५१,०००/-	प.भ.श्री माणेकभाई - वडु (ग्लास-अमेरिका)
रु. ५१,०००/-	प.भ.श्री करसनभाई राघवाणी - अहमदाबाद
रु. ५१,०००/-	प.भ.अ.नि. प्रियाबेन मनजी राघवाणी - अहमदाबाद
रु. ५१,०००/-	प.भ.श्री नारण कानजी राघवाणी - अहमदाबाद
रु. ५१,०००/-	प.भ.श्री रीमाबेन करशनभाई राघवाणी - अहमदाबाद
रु. ५१,०००/-	प.भ.श्री डॉ. नरेन्द्रभाई डी. भावसार
रु. ५१,०००/-	प.भ.श्री मौलिक भावसार - अमेरिका
रु. ५१,०००/-	प.भ.श्री जयेशभाई महेन्द्रभाई पटेल - सिडनी - ओस्ट्रेलिया

शुभ प्रसंग पर भेंट देने के योग्य अथवा व्यक्तिगत संग्रह के लिये - श्री नरनारायणदेव की प्रतिमा वाला ५/१०/२० ग्राम चांदी का सिक्का म्युजियम में प्राप्त होता है।

सूचना : श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. मोटा महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं।

સંપ્રદાયમાં એક માત્ર વ્યવસ્થા શ્રી સ્વામિનારાયણ મ્યુઝિયમમાં મહાપૂજા / મહાભિષેક નોંધાવવા સંપર્ક કરો.
મ્યુઝિયમ મોબાઈલઃ- ૯૮૭૯૫૪૯૫૯૭, પ.ભ. પરષોત્તમભાઈ - દાસભાઈ (બાપુનગર) : ૯૯૨૫૦૪૨૬૮૬
www.swaminarayanmuseum.org/com • email: swaminarayanmuseum@gmail.com

॥भक्तिसुधा॥

(प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के आशीर्वचन में से) एकादशी सत्संग सभा के अवसर पर (कालुपुर मंदिर हवेली) "मोह का त्याग करके मोहन तक जाना है"

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल – घोडासर)

हम सभी को यह मानव शरीर मिली है । इसमें जन्म से मृत्यु तक की यात्रा है । इसमें तो अवस्था 'जरा' और 'व्याधि' है । उसका ध्यान रखना है । तो 'जरा' अर्थात् वृद्धावस्था । अर्थात् शरीर की यात्रा वृद्धावस्था के थोडे-थोडे चिन्ह दिखाई देते है । तो हम सभी व्याकुल हो जाते है । कि हम अपनी युवावस्था को रोक रखे । जैसे है वैसे बने रहे । ऐसा हो नही सता है । जिस प्रकार प्रात: के बाद रात्रि दिवस चक्र बदलता रहता है । उसी प्रकार जीव जन्म लेता है । पहले बाल्यावस्था के बाद किशोरावस्था के बाद युवावस्था के बाद प्रौढावस्था और वृद्धावस्था । उसमें वृद्धावस्था आना किसी को अच्छा लगता नही है । हमसे वृद्धावस्था स्वीकार नही होता है । इस कारण से अपने अंदर 'व्याकुलता' आती है । यह अहंकार से बुद्धि से होती है । लेकिन ऐसा नही होने देना चाहिए । वृद्धावस्था को मन से स्वीकार कर लेना चाहिए । हमारा कोई परिवर्तन नही होता है । मात्र शरीर की अवस्था बदलती है । ''मै आत्मा हूँ'' ऐसा होने पर शीघ्र स्वीकार होगा । सम्यक समझ से अंदर ''निराकुलता'' पैदा होती है । 'मै' और 'मेरा' लगता है । इसलिये अधिक कष्ट लगता है । और दूसरा ''व्याधि' होता है । व्याधि अर्थात् ''अभाव का दु:ख'' जो वस्तु म्हारे पास नही है । उसका शोक व्याधि है । जो वस्तु हमारे पास नही है उसकी चिंता ही 'व्याधि' कही जाती है । अर्थात् मानसिक दु:ख तथा हमारे द्वारा बनाये गये सुख है । जो वस्तु हमारे पास नही है । उसे हम स्वीका रनही करते है । उदाहरण स्वरुप हमारे पास हजार रुपया है । तो लाख क्यो नही ? उसका दु:ख, घर है तो बंगला क्यो नही है ? अर्थात् 'संतुष्टि' नही दूसरा व्याधि का कारण हर जगह पर अनुकुलता की आशा और सानुकुलता नही मिलती है । तो इसका दुख होता है । तो यह दो वस्तु में संतोष पूर्ण जीवन हो तो जन्म से मृत्यु तक यात्रा सरल हो जाती है । जो हमारे पास नही है उसे प्राप्त करने की भावना उसे ''आसक्ति'' कहते है । इस कारण से अनासक्त की भावना रखना चाहिए । अर्थात् अंदर से वैराग्य का भाव होना चाहिए । जो काफी असम्भव है । महाराजने स.प्र.प्र. के ३६ वे वचनामृत में कहे है कि ''जिसने संसार का त्याग किया । त्यागियो का वेश दारण किया । परमेश्वर के अलावा असत पदार्थो के प्रति प्रेम रखता है । वह यदि एकांतिक साधु है । उसे कंगाल मनुष्य के समान समझे । त्याग मात्र वेष धारण करने से नही होता है । जो त्यागी होता है । उसे कँचन और कचरा समान लगात है । त्याग अर्न्तमन की अवस्था होती है । कोई भी व्यक्ति माला फेर रहा है । उसका मन संसार में लगा है तो वह फल नही प्राप्त करता है । यदि आप के मन में स्मरण चल रहा है । और चित्तवृत्ति भगवान के प्रति है तो उसका फल मिलता है . जिसके अंतर में परमात्मा का वास होता है । वही धनवान है । आसक्ति भगवान में हे तो हम धनवान है । अनपे से बडा तो कोई नही है । सर्व साक्षी सर्व दृष्टा सर्व नियंता अनंत कोटि ब्रह्मांद के अधिपति जो है । उनकी शरण में हम सभी है । हमारे पिता है । महाराज अपने हृदय में स्थायीय रुप से निवास करे । ऐसा करने के लिये क्या करे ? सभी को ज्ञात है शुद्धता रखे । यदि हम किसी के घर जाते है तो कुछ देर के बाद उद्वेग दिखाई दे तो । क्योकि वहाँ का वातावरण अशुद्ध होता है । वहाँ

हम रुक सकते है ? नही रह सकते । थोडी देर में चले जायेगे । महाराज को यदि स्थायीतौर पर अंतर में रखना हो तो काम, क्रोध, लोब, मद इत्यादि चकरा को दूर करने का प्रयास करना पडेगा । अहंकार है तो बड़े-बड़े कचरा है । वह तुरंत दिखाई दे देता है । वैसे मनुष्य के स्वभाव पर होता है । हम किसी व्यकित से एक या दो बार जब हम मिलते है । तब अहंकार दिखाई दे देता है । जहाँ पर 'मै' होता है । वहाँ पर भगवान नही रहते है । किसका अहंकार रखे । पूरे ब्रह्मांड मे अपना क्या अस्तित्व है । कीडे के रोय के बराबर भी अपना अस्तित्व नही है । अच्छा व्यवसाय हो, अधिक आमदनी हो और अपने हाथ से कोई अच्छा कार्य हो जाये तो हमे अहंकार आ जाता है । कि मैने किया है । ऐसा नही सोचना चाहिए । बल्कि ऐसा सोचना चाहिए कि वह कार्य करने के लिये प्रभुने मुझे चुना है । इस प्रकार भगवान का उपकार माने कि हम निमित्त बने है । हम भगवान की पूजा सेवाक रते है । भगवान के लिये भोग बनाते है । तो भगवान के उपर एहसान नही करते है । ऐसा भाव रखना चाहिए । भगवान आप के हाथ का स्वीकार रहे है । यह इनकी दया है । भगवान की सेवा पूजा भक्ति करने की ईच्छा की जागृति होना । यह बड़ी से बड़ी कृपा है । कुछ लोगो के पास अधिक सुविधा होती है । लेकिन मन में इच्छा नही होती है । अच्छा वाचन करने की आदत सेवा, भक्ति से माध्यम से अन्तरमन में वातावरण सुनीचित बनाता है । भगवान मे एक बार मन लग जाये तो कुछ करने की आवश्यकता नही पडती है । अंतर में वैराग्य आ जाता है । परमात्मा का रस मिल जाये तो संसार का रस फीका लगता है । जिस प्रकार मछली का जीवन जल है । लेकिन जल से अच्छा दूध होता है । क्योकि ? दूध में रखने से वह मर जायेगी । मछली जल बिना नही रह सकती है । इसी प्रकार जीव का घर परमात्मा है । इस लिये इस जीव को परमात्मा की प्राप्ति ही रखनी चाहिए । परमात्मा को प्राप्त करना सरल है । लेकिन उन्हे प्राप्त करने की ईच्छा ही कठिन है । एकबार इच्छा हो जानेप र यात्रा शुरु हो जाती है । और पहुंच भी जाते है । जिस प्रकार छोटे बच्चे को पढने हेतु स्कूल में भेजते है । धीरेधीरे वह उच्च कक्षा में पहुंच जाता है । वह स्वयं क्रम से आगे बढता है । जागृति आ जायेगी । लेकिन अपनी असावधानी और चालाकी काम खराब कर देती है । हमारी चालाकी अर्थात् क्या ? क्रम अनुसार बढने के साथ कई बार लोग कूढ जाते है । जिससे सीढी फिसल जाते है । भक्ति मार्ग पर चलने से कुछ परेशानियाँ तो आती है । इसमें सावधानी रखना चाहिए । हनुमानजी सीता की खोज में गये थे । तो उन्हे भी कष्ट मिला था । सीताजी अर्थात् पतिव्रता भक्तिकी साक्षात् स्वरुप । हनुमानजी को सर्वप्रथम सुरसा मिली । ये लोभ की प्रतीक है । वह मुँह बड़ा करके खाना चाहती थी । इसके बाद सिंहका मिलि थी । यह क्या करना चाहती थी । वह नभचरो को पकडकर खा जाती थी । यह ईर्ष्या की प्रतीक है । ईर्ष्या में क्या होता है । यदी दुख का कारण बनती है । इसके बाद लंकिनी मिलती है । लंकिनी अर्थात् मोह की प्रतीक है । यह जो हमारी संसार यात्रा है । वह मोह से प्रारम्भ होती है । संसार का मूल 'मोह' है । इस लिये लोभ, ईर्ष्या और महो, तीनो को जीतना अति आवश्यक हो जाता है । हनुमानजी के मनके अंदर भगवान का सतत स्मरण चालु था । तीनो को हरा सके । सतत स्मरण करने से हमें भी प्रभु प्राप्त होगे । बुद्दि बल मिलेगा । आत्मबल मिलेगा । बुद्धि अच्छी रहेगी । भक्ति मार्ग के विघ्न दूर रहेगे । अपरा आत्मबल उँचा होगा । इसमे यह प्रयास करना है कि मारे अंदर से प्रभु जाये नही हमारी यह यात्रा मोह से मोहन तक है । मोह से चलकर मोहन तक पहुंचना है ।

हम कई बार हे नाथ ! भगावन के लिये प्रयोग करते है । नाथ शब्द है । उसकी अनुभूति अति सुंदर है । हे नाथ ! शब्द में सब कुछ आ जाता है । एकबार आँख बंद करके हे नाथ बोले - भगवान की प्रिय मूर्ति को याद करे । हे नाथ ! बोलकर पुकारे । उसका वर्णन हमसे नही हो सकता है । क्योकि ? यह अनुभव की बात है । अत्यधिक सरस अनुभूति होती है ।

॥ श्री स्वामिनारायणो विजयतेतराम् ॥

धनुर्मासमां विशेष सत्संग भक्ति

सर्वोपरी श्री स्वामिनारायण भगवान ने अपने अधिकार में लेकर ऐसे परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के परम पवित्र सानिध्यमें तथा श्रीहरि के अपरस्वरुप प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री एवम् पूरे धर्मकुल की शुभ आज्ञा से और परमवंदनीय संतो की उपस्थिति में ता. १६-१२-२०२२ से ता. १४-०१-२०२३ अर्थात् पूरे महीने प्रात: काल श्री स्वामिनरायण महामंत्र धुन का अलौकिक लाभ ले । इस लिये ता. १४-०१-२०२३ के मकर संक्रांति के पुण्य पर्व होने से आप सभी अपने जीवन में वर्ष में एकबार आने वाले पुण्य पर्व पर दान पुण्य करके जीवन को धन्य बनाये ।

मकर संक्रांति (उत्तरायण) के पुण्य पर्व पर अलौकिक दान पुण्य

श्री नरनारायणदेव देश के पूरे हरि मंदिर के कोठारीश्री और श्री नरनारायणदेव युवक मंडल से अनुरोध

श्री नरनारायणदेव देश के पूरे शहर और गाँव के कोठारीश्री और श्री नरनारायणदेव युवक मंडल के प्रतिनिधियो से विशेष अनुरोध है कि आप के गाँव में उत्तरायण के पर्व पर झोली घुमाकर, अनाज, नगद, जीवन जरुरी पदार्थ दान में आये । वह सभी सामान अहमदाबाद कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर में ''आँगन'' में जमा कराके रसीद ले ले । यह आप का दान अनेक निराधार, जरुरतमंत तक जायेगा । यह संकल्प अपने प.पू. आचार्य महारजाश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री और प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री और पू. श्रीराजा का है। इस लिये इस आँगन की सेवा प्रवृत्ति प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के देख-रेख के नीचे अपने सत्संगी बहनो द्वारा किया गया था।

इस आँगन में दान करने वाले को **80-G** के अन्तर्गत आयकर में लाभ मिलता है।

महंत स्वामी
शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी
श्रीहरि स्मृति सहित जयश्री स्वामिनारायण

सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर काली चौदश को श्री हनुमानजी की पूजा - समूह शारदा पूजन

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के सानिध्य में आसो वद-१४ ता. २४-१०-२२ के दिन शायं ६ बजे धर्मकुल के कुल देवता श्री हनुमानजी महाराजश्री का प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री के करकमलो द्वारा पूजन-अर्चन विधिवत रुप से पूर्ण किया गया । तत्पश्चात अन्नकूट की आरती की गयी । जिसका लाभ सभी हरिभक्तो ने लिया था।

सामूहिक शारदा पूजन-चोपडा शायं ६-३० बजे प्रसादी के विशाल सभा मंडप में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री के करकमलो से मंदिर के विद्वान गोर महाराज द्वारा समूह चोपडा पूजन विधिवत रुप से पूर्ण किया गया । इसमें हजारो व्यापारीभाई आज के संगणक के समय में अपने रोजमेल खातावही का धर्मकुल द्वारा पूजा हो । तो व्यवहार शुद्ध और नीतिमय बने । व्यापार में लगातार वृद्धि-विकास हो । ऐसी शुभ भावना से प्रति वर्ष लोग धर्मकुल के हाथ से ही पूजन का आग्रह रखते है । पू. महंत स.गु. शा. स्वामीश्री निर्गुणदासजीने सुंदर प्रबन्ध किये थे।

नये वर्ष ता. २९-१०-२०२२ : बुधवार परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की मंगला आरती प्रातः ५ बजे और श्रृंगार आरती प्रातः ६-३० पर प.पू. बड़े महाराजश्री ने आरती की थी । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्रीने श्री नरनारायणदेव का दर्शन करके अपने बैठक में सभी संत-हरिभक्तो को आशीर्वाद और दर्शन दिये थे।

कार्तिक सुद-९ अन्नकूटोत्सव : इस वर्ष दिवाली के दिन सूर्यग्रहण होने के कारण श्री नरनारायणदेव आदि देवो का अन्नकूटोत्सव कार्तिक सुद-९ को ता. २-११-२०२२ बुधवार के दिन प्रातः १०-३० बजे अहमदाबाद मंदिर में विराजमान श्री नरनारायणदेव आदि देवो को छप्पन भोग अन्नकूट की आरती प.पू. लालजी महाराजश्री ने किया था। इस अवसर पर दर्शन करने के लिये हजारो हरिभक्त सायं ४ बजे तक आते रहे । पूज्य महंत स्वामीने सुंदर प्रबन्ध करके सभी को दर्शन का सुख दिलवाये।

(कोठारी स्वामी कालुपुर मंदिर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर हर्षद कोलोनी में तुलसी विवाह

श्री नरनारायणदेव की परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा के साथ समस्त धर्मकुल परिवार के शुभ आशीर्वाद से प.भ. श्री दासभाई की प्रेरणा और महंत स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकासदासजी (गांधीनगर) के मार्गदर्शन में श्री नरनारायणदेव युवक मंडल तथा बहनो के पूरे सहयोग से वि.स. २०७९ देवदिवारी के पवित्र अवसर पर ता. ७-११-२०२२ के दिन शायं के समय तुलसी विवाह को उल्लास तथा श्रद्धा के साथ मनाया गया।

तुलसी विवाह के अंतर्गत रास गरबा, मंडप मुहूर्त, ठाकुरजी की रथयात्रा, तुलसी पूजन तथा विवाह की विधि के साथ भोजन प्रसाद आदि सम्पन्न हुआ । ठाकुरजी के यजमान पद पर प.भ.श्री मधुभाई छगनभाई वेकरिया परिवार तथा माताजी के यजमान पद पर प.भ. गं.स्व. कहुंबाबेन रामजीभाई सुहागिया परिवार ने दिव्य लाभ उठाया था।

प्रसंगोचित सभा में पू. महंत शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकासदासजी (गांधीनगर) यजमान परिवार का सम्मान करके सभी को आशीर्वाद दिये थे । (गोरधनभाई वी. सीतापरा)

सर्वोपरी तीर्थभूमि छपैयाधाम के आँगन में श्रीनद सत्संगिभूषण सप्ताह पारायण

श्री घनश्याम महाराज के असीम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा धर्मकुल परिवार के शुभ

आशीर्वाद से, महंत शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी (जेतलपुर) की प्रेरणा से, जेतलपुर, मथुरा और छपैया मंदिरके पू. महंत स्वामी के मार्गदर्शन से छपैया मंदिर के महंत स्वामी देवप्रकाशदासजी तथा प.भ. दासभाई (हर्षद कोलोनी) द्वारा व्यवस्था के सहयोग से छपैयाधाम के आँगन में प.भ. श्री जगदीशभाई चीमनलाल पटेल परिवार गाँव ओला (वर्त. गांधीनगर) यजमान पद पर धर्मपत्नी अ.नि. मंजुलाबेन की याद में शा. स्वामी यज्ञपुरुषदासजी (कलोल) वक्ता पद से ता. ४-९ से १०-९-२०२२ तक श्रीमद् सत्संगिभूषण सप्ताह पारायण सुंदर संगीत के साथ कीर्तन और रासोत्सव का अच्छा प्रबन्ध किया गया था।

कथा में पोथीयात्रा दीप प्रगटीकरण श्री घनश्याम जन्मोत्सव, सुवासिनी, रामप्रतापजी विवाह, गद्डी पट्टाभिषेक उपलक्ष्य में श्री घनश्याम महारजा का षोडशोपचार पूजन के साथ पंचामृत और केशर के जल से जलाभिषेक और छप्पनभोग अन्कूट अधिक उल्लास एवम् श्रद्धा से मनाया गया । विशेष तथा ता. ७-८-२२ को जलझीलनी एकादशी को गणेश विसर्जन, ठाकुरजी को जल, झीलवा का कार्यक्रम तथा नारायण सरोवर की समूह संध्या आऱती का कार्यक्रम यजमान परिवार ने पूर्ण किया था।

इस अवसर पर तीर्थो से आये ब्रह्मनिष्ठ विद्वान संत महंत थे । तथा छपैया के वयोवृद्ध स.गु. स्वामी जगतप्रकाशदासजी, महंत स.गु. शा. स्वामी निर्गुणदासजी (अहमदाबाद) दोनो पू. पी.पी. स्वामी इत्यादि संतोने प्रसंगचित आशीर्वाद दिये थे। तथा प.पू. महाराजश्री शुभआशीर्वाद दिये थे । यजमान परिवार के गाँव के लोग तथा स्नेहीजन एवम् हर्षद कोलोनी बापुनगर सत्संग समाज के भक्तगणोने कथा श्रवण तथा जन्मभूमि मे महानुभाव दिव्य लाभ लेकर धन्य हुए।

यजमान परिवार तथा कथा के सुनने वालो का स्थान, संत निवास और सभाखंड के निर्माण मे सेवा लिखवाये, छपैयाधीश श्री घनश्याम महाप्रभु की कृपा प्राप्त किये।

(गोरधनभाई वी. सीतापरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर रामबाग - कांकरिया

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपा से तथा प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के आज्ञा-आशीर्‌ाद से कांकरिया श्री स्वामिनारायण मंदिर महिला मंडल की बहनो द्वारा (आचार्य वंदना) महोत्सव के उपलक्ष्य में ५१ घंटे का महामंत्र धुन ५१, श्री हनुमान चालीसा का पाठ तता भक्तचिंतामणी का पारायण किया गया था।

(श्री नरनारयणदेव युवक मंडल - कांकरिया)

श्री स्वामिनारायण मंदिर नांदोल

परम कृपालु श्री नरनारायणदेव की परमकृपा तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहा ँ पर चातुर्मास में कथा करने के लिये अहमदाबाद मंदिर के साधु केशवचरणदासजी औऱ घनश्याम स्वामीने नांदोल मंदिर में हरिभक्तोने प्रात: रात्रि कथा वार्ता करके सुंदर लाभ दिये थे।

(कोठारी नांदोल मंदिर)

हिंमतनगर में नूतन शिखरबद्ध मंदिर - मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव

भगवान श्री स्वामिनारायण तथा भरतखंड के राजाधिराज परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की असीम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री, प.पू. बडे महाराजश्री, प.पू. १०८ भावि आचार्य श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद के साथ आज्ञापूर्वक जेतलपुरधाम के महंत स.गु. शास्त्री स्वामी आत्मप्रकाशदाजी तथा स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदाजी तथा वाली मंदिर के महंत स्वामी हरिप्रसाददासजी के मार्गदर्शन से हिम्मनगर मंदिर के महंत स.गु. शास्त्री स्वामी प्रेमप्रकाशदासजी के प्रबन्धनुसार हिम्मनगर शहर में पांच शिखरवाले नये भव्य मंदिर का निर्माण किया गया।

इस मंदिर का पूरा निर्माण कार्य तथा संतो-हरिभक्तो के आवास, रसोई, सभामंडप की पूरी सुविधा तैयार की गयी है। प.पू. आचार्य महाराजाश्री के आज्ञा से ता. ७-११-२०२२ से ता. १३-११-२०२२ तक भव्य मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव मनाया गया था । महोत्सव के प्रारम्भ में प.पू. लालजी श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीने पधारकर दर्शन-

आशीर्वाद दिये । महोत्सव के अवसर पर श्रीमद् भागवत पारायण कथा हुई । कथा के वाचक स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (जेतलपुर) आकर कथामृत का रसपान कराये थे । श्री विष्णुयाग, अखंड धुन, ठाकुरजी की नगर यात्रा, रात्रि के कार्यक्रम किये गये थे ।

ता. १३-११-२०२२ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के करकमलो द्वारा नये मंदिर में ठाकुरजी की प्राण प्रतिष्ठा विधिवत रुप से की गयी ।

इस महोत्सव के मुख्य यजमान पद पर प.भ.श्री रमणभाई पसाभाई पटेल परिवार (अमेरिका) लाभ लिये थे। हिम्मनगर सत्संग समाज तथा आस-पास के गाँव वाले हरिभक्त तन, मन, धन के सहयोग से हिम्मनगर नूतन श्री स्वामिनारायण मंदिर सत्संग समाज में नई पहचान बनाये है ।

(प्रेमप्रकाशदासजी स्वामी - हिम्मतनगर महंतश्री)

जेतलपुरधाम में भागवत पंचान्ह पारायण

भगवान श्री स्वामिनारायण के चरणरज से परमपावन जेतलपुरधाम में विरामजान श्री रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज की असीम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री, प.पू. बडे महाराजश्री, प.पू. १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से जेतलपुर मंदिर के महंत स.गु. शास्त्री स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदाजी के मार्गदर्शन से पू. महंत के.पी. स्वामी के प्रबन्ध अनुसार जेतलपुरधाम में ता. २२-१०-२०२२ से ०२-११-२०२२ तक श्रीमद् भागवत पंचान्ह पारायण पूर्ण किया गया था ।

इस कथा के वक्तापद पर स.गु. ब्रह्मचारी हरिस्वरुपानंदजी (कालुपुर मंदिर ट्रस्टीश्री) बैठकर कथामृत का रसपान किया गया था । ता. २-११-२०२२ के दिन प.पू. आचार्य महाराजश्रीने आकर आशीर्वाद प्रदान किये । जिसमें यजमान पद का लाभ गं.स्व. कपिलाबेन सोमाभाई अमीन, प.भ. श्री भद्रेशभाई सोमाभाई अमीन परिवार ने लाभ लिया था । इस कथा में धामो धाम से संत सांख्ययोगी बहन आकर दर्शन आशीर्वाद का लाभ दिये थे ।

(शास्त्री स्वामी धर्मनंदनदासजी - जेतलपुरधाम)

असलाली गाँव में श्रीमद् भागवत रात्रि पारायण

परमकृपालु श्री स्वामिनारायण भगवान तथा जेतलपुरधाम में विरामजान श्री रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज की असीम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री, प.पू. बडे महाराजश्री, प.पू. १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से जेतलपुर मंदिर के महंत स.गु. शास्त्री स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदाजी के मार्गदर्शन और पू. महंत के.पी. स्वामी के प्रबन्ध अनुसार असलाली धाम के आंगन में ता. २-११-२०२२ से ता. ८-११-२०२२ तक श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण का सुंदर आयोजन किया गया था ।

कथा वाचक पद पर स.गु. ब्रह्मचारी स्वामी हरिस्वरुपानंदजी (कालुपुर मंदिर के ट्रस्टी) विराजकर कथा का रसपान कराये थे । कथा के यजमान पद पर प.भ. श्री पंकजभाई पटेल (असलाली) परिवार ने लाभ लिया था । कथा में तीर्थो से संत आकर आशीर्वाद दिये थे ।

श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण असलाली धाम में ता. १६-११-२२ से २२-११-२२ तक श्रीमद् सप्ताह पारायण का सुंदर प्रबन्ध किया गया था ।

कथा के वक्तापद पर शा. धर्मनंदनदासजी स्वामी (जेतलपुर) ने रसपान करवाया था । यजमान पद पर श्री बाबुभाई मणीभाई पटेल, प.भ. श्री मनन विरेन्द्रकुमार (मुन्नाभाई) पटेल परिवार था । असलाली तथा दसक्रोई तालुका में कई सत्संगी कार्य करने वाले अ.नि. विरेन्द्रकुमार (मुन्नाभाई) तथा अ.नि. मयूरीबेन के मोक्ष हेतु की गयी थी । तीर्थो से आये संत तथा सांख्ययोगी बहने आकर आशीर्वाद का लाभ दिये थे ।

(शास्त्री स्वामी धर्मनंदनदासज - जेतलपुर)

महिजडा गाँव में मूर्ति प्रतिष्ठा

भगवान श्री स्वामिनारायण महाप्रभु तथा जेतलपुरधाम में बिराजमान महाप्रतापी श्री रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज की छत्र छाया में आये । श्री स्वामिनारायण मंदिर महिजडा (ता. दशक्रोई) अधिक प्राचीन अपना मंदिर है । समय बीतते हुए जीर्ण हो गया है । जेतलपुर मंदिर महंत

स.गु. शास्त्री स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी के मार्गदर्शन एवम् प्रेरणा से मंदिर का जीर्णोद्धार किया गया । प.पू. आचार्य महाराजश्री को श्री नरनारायणदेव के अर्न्तगत लेख दिया गया था । ता. २-११-२२ कार्तिक सुद नवमी के दिन प.पू. आचार्य महाराजश्री यहाँ आकर ठाकुरजी के स्वरुपो की आरती किये थे । तथा मूर्ति की प्रतिष्ठा करके आशीर्वाद प्राप्त किये । इस महिजडा गाँ वमें प्रत्येक महीने के ५ वी तारीख को जेतलपुरधाम से संत आकर सत्संग कथा का लाभ देते है ।

(शास्त्री स्वामी धर्मनंदनदास - जेतलपुरधाम)

श्री स्वामिनारायण मंदिर मुबारकपुर के १२ वे पाटोत्सव पर

परमकृपालु परमात्मा श्री स्वामिनारायण भगवान की पूर्ण कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा स्वामी श्री पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (महंतश्री सेक्टर-२ गांधीनगर) की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर मुबारकपुर का १२ वाँ वार्षिक पाटोत्सव किया गया । जिस में हरिकृष्ण महाराज का दिव्य अभिषेक करके अन्नकूट रखा गया था । इस अवसर पर स्वामीश्री पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (महंतश्री गांधीनगर से-२) मंडल सहित पधारे थे। सम्पूर्ण उत्सव उल्लासपूर्वक मनाया गया ।

(स्वामी देवप्रकाशदासजी - उनावा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर गवाडा गाँव में पांच दिन की कथा

परमकृपालु परमात्मा श्री स्वामिनारायण भगवान की पूर्ण कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा स्वामी श्री पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (गांधीनगर) की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर गवाडा गाँव के आँगन में पांच दिन की श्रीमद् भागवत सप्ताह का सुंदर आयोजन स.गु. शास्त्री स्वामी श्री राकृष्णदासजी (कोटेश्वर) के वक्तापद पर की गयी थी । सम्पूर्ण सभा का संचालन महंत शास्त्री स्वामी नारायणमुनिदासजी (कोटा)ने किया था । कथा के मध्य तीर्थो से आये संत भी थे ।

(स्वामी देवप्रकाशदासजी - उनावा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर बिलोदरा का ९ वाँ वार्षिक पाटोत्सव

परमकृपालु परमात्मा श्री स्वामिनारायण भगवान की पूर्ण कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा स्वामी श्री पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर बिलोदरा का ९ वाँ वार्षिक पाटोत्सव उल्लासपूर्वक मनाया गया । जिस के मध्य लोज आगमन से लेकर गढपुर तक की वन विचरण कथा शास्त्री स्वामी सत्यसंकल्पदासजी (कोटेश्वर)के वक्तापद से हुई । और शाकोत्सव का आयोजन किया गया था । ठाकुरजी का सुंदर अन्नकूट रखा गया ता । इस अवसर पर स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (महंतश्री गांधीनगर से-२) मंडल सहित पधारे थे । पूरा महोत्सव धामधूम से मनाया गया था ।

(स्वामी देवप्रकाशदासजी - उनावा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर आनंदपुरा

परमकृपालु परमात्मा श्री स्वामिनारायण भगवान की पूर्ण कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा महंत स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से आनंदपुरा (कुकरवाडा) गाँव के आँगन में अ.नि. बलदेवभाई (दासकाका) जीवणदास पटेल की पुण्य याद में पाँच दिनका श्रीमद् भागवत सप्ताह का सुंदर प्रबन्ध स.गु. शास्त्री स्वामी यज्ञप्रकाशदासजी (महंतश्री पंचवटी कलोल) के वक्तापदे से की गयी । सभा का पूर्ण संचालन महंत स्वामी देवप्रकाशदासजी (उनावा) ने किया था । कथा के मध्य संत आये थे ।

(चेतन भगवानदास पटेल - आनंदपुरा)

मूली प्रदेश के सत्संग समाचार

शेरवपाटधाममे (मूली प्रदेश) नूतन श्री स्वामिनारायण मंदिर तथा स.गु. श्री निष्कुळानंद स्वामी जन्मस्थान उद्घाटन महोत्सव

परमकृपालु आराध्यदेव भगवान श्री स्वामिनारायण तथा भरतखंड के राजाधिराजी श्री नरनारायणदेव की असीम कृपा से श्री राधाकृष्णदेव मूलीधाम के प्रसिद्ध धाम

शेखपाट धाम में प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महारजाश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. १०८ लालजी महाराजश्री तथा पूरे धर्मकुल के आज्ञा से जेतलपुरधाम के महंत स.गु. शास्त्री स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा एवम् मार्गदर्शन में मूली मंदिर के पार्षद गिरीशभगत गुरु स.गु. स्वामी लक्ष्मीप्रसाददासजी के परिश्रम से जामनगर जिले में स्थित शेखपाट धाम में नूतन श्री स्वामिनारायण मंदिर में मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा तथा स्वामी श्री के जन्म स्थल का उद्‌घाटन प.पू. आचार्य महाराजश्री के करकमलो से ता. ३०-९-२०२२ कार्तिक सुद छठ्ठ के दिन पूर्ण हुआ।

यह महोत्सव ता. २८-९-२२ से ३०-९-२०२२ तक उल्लास पूर्वक मनाया गया । इस अवसर पर स.गु. श्री निष्कुलानंद स्वामी रचित श्री भक्तिचिंतामणी ग्रंथ की कथा तथा स्वामीश्री के जीवनी स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (जेतलपुरधाम) कथामृत का पान कराये थे। इस अवसर पर धामधाम से आये संत-सांख्ययोगी बहने दर्शन आशीर्वाद का लाभ उठाये थे। नूतन मंदिर तथा जन्म स्तल के नवनिर्माण हेतु दाता तथा कथा पारायण के मुख्य यजमान श्री प.भ. करशनभाई कानजीभाई राघवाणी तथा प.भ. श्री लक्ष्मणभाई भीमजीभाई राघवाणी सम्पूर्ण राघवाणी परिवार का मुख्य सहयोग था। दूसरे कई हरिभक्तो के सहयोग से तथा शेखपाट गाँव-हालार प्रान्त के हरिभक्त के सहयोग से यह धाम एक प्रसिद्द यात्राधाम हो गया है । महोत्सव के बाद २-११-२२ के दिन अपने बड़े महाराजश्री हरिभक्तो के साथ पधारकर दर्शन-आशीर्वाद दिये थे।

(शा. धर्मनंदनदास स्वामी - जेतलपुरधाम)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कारोल (ता. चूडा)

पाटोत्सव

मूलीधाम निवासी श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर कारोल के १०९ पाटोत्सव की कार्तिक सुद-७ को अच्छे से मनाया गया था।

इस अवसर पर लींबडी मंदिर की सांख्ययोगी बहने आकर हरिभक्त अपने घर से तैयार व्यंजन अन्नकूट में रखकर आरती किये । तथा कथा-वार्ता भी किये थे । अन्नकूट का प्रसाद घर-घर वितरित किया गया था।

(कोठारी नरेन्द्रभाई सोनी - कारोल)

अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्री नरनारायणदेव आदि देवो की थाल-रसोई की सूची

थाल का विवरण		रसोई
चुरमाकालड्डू	रु. २,०००/-	रु. १०,०००/-
मगशका लड्डू	रु. २,०००/-	रु. १०,०००/-
बूंदी के लड्डू	रु. २,०००/-	रु. १०,०००/-
मोतीचूर के लड्डू	रु. २,०००/-	रु. १०,०००/-
मोहनथाल	रु. २,०००/-	रु. १०,०००/-
मगशपूरी	रु. २,५००/-	रु. १५,०००/-
मालपूवा	रु. २,५००/-	रु. १५,०००/-
खीरपूरी	रु. २,५००/-	रु. १५,०००/-
अडदिया का थाल	रु. २,५००/-	रु. १५,०००/-
साटा का थाल	रु. २,५००/-	रु. १५,०००/-
शीखंड पुरी	रु. ३,५००/-	रु. २०,०००/-
ड्रायफ्रुट हलवा	रु. ३,५००/-	रु. २०,०००/-
बासुंदी पुरी	रु. ३,५००/-	रु. २०,०००/-
खीर-मालपुवा	रु. ३,५००/-	रु. २०,०००/-
गुलाब जामुन	रु. ४,०००/-	रु. २०,०००/-
जलेबी	रु. ४,०००/-	रु. २०,०००/-
मैसुब	रु. ४,०००/-	रु. २०,०००/-
काजू-बदाम मैसुब	रु. ५,०००/-	रु. २०,०००/-
सत्तरधाम का थाल	रु. ३,०००/-	
स्थायी सुरक्षित थाल		**रु. 10,000/-**
स्थायी सुरक्षित थाल (सांजमे)		**रु. 5,001/-**

ठाकोरजी को शायं का थाल रु. 500/-

Mo. : 8238001666

अहमदाबाद मंदिर में श्री ठाकुरजी का थाल तथा संतवर्णी पार्षदो की रसोई देने वालो की सूची

अषाढ सुद-२ प.भ. पटेल मावजीभाई के (अमदावाद), प.भ. लाठीया मधुभाई गोरधनभाई (अमदावाद). **अषाढ सुद-३** प.भ. सभाडीया प्रितेश हिरजी (मांडवी-कच्छ). **अषाढ सुद-४** प.भ. सागर रसिकभाई जीयाणी (अमदावाद), प.भ. पटेल किशनकुमार (अमदावाद). **अषाढ सुद-५** प.भ.अ.नि. दरजी जीवणभाई सांकळचंद (अमदावाद). **अषाढ सुद-६** प.भ.अ.नि. चौधरी दलाभाई ठगुभाई (बालवा), अ.नि. पटेल वाघजीभाई माधवदास. **अषाढ सुद-७** प.भ.अ.नि. वेकरीया वालबाई मावजी (बळदीया-कच्छ), प.भ. पटेल ठाकरसीभाई हरजीभाई (सुरत). **अषाढ सुद-८** प.भ. भावसार भावनाबेन राजेशभाई (अमदावाद). **अषाढ सुद-९** प.भ.अ.नि. पोकार शामजीभाई देवराजभाई (नडीयाद), घनश्याम ईम्पेक्ष - अक्षर ईम्पेक्ष (अमदावाद). **अषाढ सुद-१०** प.भ. पटेल सुरेशभाई भक्तिभाई (अमदावाद), प.भ.अ.नि. ठक्कर विनोदभाई रामजीभाई (अमदावाद), प.भ. पटेल रमणभाई काळीदास - कपिलाबेन रमणभाई (अमदावाद). **अषाढ सुद-१२** श्रीहरिकृष्ण महाराज - प.भ. भावसारभाई (अमदावाद), प.भ. मस्की रविकांत (अमदावाद), प.भ. सोजीत्रा विठ्ठलभाई करशनभाई (अमदावाद), प.भ. सोनी मिलन (अमदावाद), प.भ. पटेल कांतिलाल करशनदास (अमदावाद), प.भ. परमार अरविंदभाई जीवराजभाई (सुरत), प.भ. पटेल वनिताबेन देवराजभाई (बळदीया-कच्छ), प.भ. पटेल बिन्देशभाई जगदीशभाई (गांधीनगर), प.भ. हिराणी मनजी शिवजी (नारायणपर-कच्छ). **अषाढ सुद-१३** प.भ. पटेल वजुभाई प्रभुभाई (पच्छम), प.भ. परमार अरविंदभाई जीवराजभाई (सुरत), सांख्ययोगी गौरीबा गुरु सांख्ययोगी मोतीबा (गढपुर). **अषाढ सुद-१५** प.भ. हालाई जगदीश भीमजी (सुखपुर-कच्छ), प.भ. दया विजय (सुखपुर-कच्छ), प.भ. पटेल निसर्ग रमेशभाई (अमदावाद).

अषाढ वद-१ प.भ. पटेल विनोदभाई पोपटभाई (कडी), प.भ. चुडासमा गीरीराजसिंह एन. (झिंझर). **अषाढ वद-२** प.भ. पटेल रणछोडभाई धनाभाई (मोटा धराडा), प.भ. पटेल शारदाबेन जे. (साबरमती), प.भ. केराई रामजी रवजी (रामपर-वेकरा-कच्छ). **अषाढ वद-३** प.भ. भाटीया जीतेन्द्रभाई (अमदावाद). **अषाढ वद-४** प.भ. श्रीवास्तव गीरीशचंद्र (अमदावाद), निलकंठ महिला मंडळ (मेमनगर), प.भ.अ.नि. वेकरीया अमरबाई धनजी (सुरजपर-कच्छ), प.भ. वाघेला गोकळभाई (पूना), प.भ.अ.नि. पटेल नटवरभाई गिरधरदास (करजीसण), प.भ. मेपाणी हिरबाई लालजी (सुखपर-कच्छ), प.भ. कामदार मयंकभाई (लीलानंद मेग्ने. प्रा.ली.) (पोरबंदर). **अषाढ वद-५** प.भ. वधासीया जतीनभाई (अमेरिका), प.भ. ठक्कर नवीनभाई नानजीभाई (धोळका), प.भ. गोहिल चंद्रकांत सुंदरजीभाई (गांधीनगर). **अषाढ वद-७** प.भ.अ.नि. वाघेला काजलबा विश्वराजसिंह (गोधावी). **अषाढ वद-९** प.भ. पटेल कामिनी ईश्वर (अमदावाद). **अषाढ वद-१०** शास्त्री स्वामी रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर), प.भ.अ.नि. पटेल रणछोडभाई ईश्वरभाई प्रभुदास (उनावा), प.भ. पटेल डाह्याभाई गोविंदभाई (अमदावाद), प.भ. पाठक भावेनभाई (अमदावाद). **अषाढ वद-१२** प.भ. पटेल नाथालाल बापुदास (खरणा), प.भ.अ.नि. पटेल रमेशभाई अंबालाल (धमासणा), प.भ.अ.नि. सोनी संगीताबेन बिपीनचंद्र (अमदावाद), प.भ. पटेल श्लोक विष्णुभाई (कलोल), प.भ. पटेल गीताबेन नरेशभाई (न्यु राणीप), श्री नरनारायणदेव कृपा (अमदावाद), प.भ. खेताणी देवशी कुंवरजी (सुखपर-कच्छ), प.भ. पटेल कैलाशबेन भक्तिभाई (अमदावाद), प.भ. हिराणी मनजी शिवजी (नारायणपर-कच्छ). **अषाढ वद-१३** प.भ. वेकरीया लालजी प्रेमजी (रामपर-कच्छ), प.भ. भावसार यश देवेन्द्रभाई (अमदावाद), प.भ. दिनेशभाई रावजीभाई (अंबापुर), प.भ. हरगोविंद दासभाई विठलाणी. **अषाढ वद-१४** प.भ. वरसाणी हिरबाई करशन (बळदीया-कच्छ), प.भ.अ.नि. केराई मानबाई हिरजी (रामपर-कच्छ), प.भ. लाखाणी क्रिश घनश्याम (बळदीया-कच्छ). **अषाढ वद-३०** प.भ.अ.नि. नाकराणी प्रेमजी शामजी (जेतलपुर), प.भ. हिराणी हिरजी झीणा (सुखपर-कच्छ), श्रीजी प्रसन्नार्थे (बळदीया-कच्छ), प.भ. समरतबेन बाबुभाई अमरशीभाई (सुरत).

श्रावण सुद-१ प.भ. रवजीभाई जयंतिभाई (जुनी हळियाद). **श्रावण सुद-२** प.भ. किंजलभाई बळदेवभाई (सोजीत्रा). **श्रावण सुद-३** प.भ.अ.नि. दिनेशभाई नाथाभाई (बालवा), प.भ. भगवानदास जोईतनदास (वडु), प.भ. अरविंदलाल केशवलाल महेता (गांधीनगर), प.भ. जसुभाई रावजीभाई पटेल (पोर), प.भ. गीताबेन दिनेशभाई पटेल (कलोल), प.भ.अ.नि. भीखीबेन कोदरभाई पटेल (धनसुरा), प.भ. हंसराजभाई मोहनभाई (पंढरपुर), प.भ.अ.नि. चंद्रिकाबेन हर्षदराय शाह (अमदावाद), प.भ. लारकीबेन मोहनदास पटेल (सोला). **श्रावण सुद-४** प.भ.अ.नि. लालभाई नाथाभाई पटेल (पोर). **श्रावण सुद-५** प.भ. रवि दिलीप हिराणी (सुखपर), प.भ. प्रेमजी रामजी हिराणी (सुखपर). **श्रावण सुद-६** प.भ. कल्याणभाई शंकरदास पटेल (देउसणा), प.भ. अमृतलाल नाथालाल पटेल (ईटादरा). **श्रावण सुद-७** प.भ. पटेल पशीबेन रमणलाल (वडु), प.भ. कमळाबेन रमणभाई पटेल (झुंडाल), हरिॐ परिवार (सरसपुर), प.भ. हरूभाई (एच.के. ट्रावेल्स) (अमदावाद), प.भ. शीवजी मेघजी धानाणी (सुखपर). **श्रावण सुद-८** प.भ. पूजन चिंतन पटेल (पलियड). **श्रावण सुद-९** अ.नि. गुणातित स्वामी त्रयोदशा निमित्ते (झुंडाल). **श्रावण सुद-१०** प.भ. चंदुजी प्रतापजी बिहोला (पालज), प.भ. पटेल राकेशभाई चंदुभाई (मोखासण), पितृ मोक्षार्थे ह. प.भ. स्नेहल सोनी (अमदावाद), श्री घनश्याम गारमेन्ट (अमदावाद), गं.स्व. गंगाबेन बेचरभाई पटेल (वावोल). **श्रावण सुद-११** प.भ. पटेल धवल रसिकभाई. **श्रावण सुद-१२** आदिश्वरनगर महिला मंडळ (नरोडा), प.भ. दर्शन महेन्द्रकुमार पाठक (अमदावाद), प.भ. कनुभाई करशनभाई सावलीया (अमदावाद), प.भ. पटेल

अहमदाबाद मंदिर में श्री ठाकुरजी का थाल तथा संतवर्णी पार्षदो की रसोई देने वालो की सूची

शारदाबेन डाह्याभाई (ओळ), प.भ. पटेल ईश्वरभाई त्रिभुवनभाई (माणसा), प.भ. अमितभाई गोविंदभाई (झुंडाल), प.भ. जयंतिलाल नारणदास सुरेलीया (अमदावाद), प.भ. चंद्रकांतभाई नथुभाई (चांदखेडा), प.भ. शैलेषभाई भावसार (अमदावाद), प.भ. पुरीबेन शांतिलाल पटेल (वडु), प.भ. बबुबेन कनुभाई पटेल (राजपुर). **श्रावण सुद-१३** प.भ. हिरेनभाई भगवानभाई मोरडीया (वडताल मंदिर), प.भ. नटवरभाई मणिभाई पटेल (वडु), प.भ. नील कृष्णकांतभाई मिस्त्री (कडी), प.भ. पटेल शैलेषभाई अमृतलाल (अमदावाद), प.भ. नयनाबेन विष्णुभाई पटेल, प.भ. मनजी शीवजी हिराणी (नारणपर-कच्छ). **श्रावण सुद-१४** प.भ. पटेल गोविंदभाई वेलजीभाई (ट्रेन्ट), प.भ. करशनभाई झीणाभाई (बळदीया-कच्छ), प.भ. डॉ. निसर्ग मुकेशभाई पटेल, प.भ. ठाकरसीभाई मुळजीभाई पटेल (जयदेपुरा), प.भ. राज ए. पटेल (अमदावाद), प.भ. गुणवंतभाई डाह्याभाई पटेल, प.भ.अ.नि. परेशभाई मनसुखभाई (बापुनगर), शास्त्री स्वामी विश्वल्लभदासजी (पीज), प.भ. सुरेशभाई पीठडीया (अमरेली). **श्रावण सुद-१५** प.भ. रमेशभाई कांतिभाई पटेल (सुरजपुरा), प.भ. समीरभाई (जन्म दिवस निमित्ते) (अमदावाद).

श्रावण वद-१/२ प.भ. जयंतिभाई वालजीभाई पटेल (गवाडा), प.भ.अ.नि. शारदाबेन नटवरभाई पटेल (ईटादरा), प.भ. मनजीभाई लालजीभाई सापरीया (धूळकोट), प.भ. धनबाई कानजी गोरसीया (मानकुवा). **श्रावण वद-३** प.भ. संतोषभाई रामलखन तिवारी (अमदावाद), प.भ. ध्रुवेशकुमार अश्विनभाई पटेल (मोटा झींझुडा), प.भ. राजेश धीरूभाई मालवीया (सुरत), प.भ. दीवाबेन भुदरदास पटेल (कलोल), प.भ. पटेल नानालाल नरोतमदास (अमदावाद), प.भ. जयेशभाई रणछोडभाई पटेल (सुकाटींबा), प.भ. भगवतीबेन रजनीकांत पटेल (बोपल), प.भ. उषाबेन पटेल (अमदावाद). **श्रावण वद-४** प.भ. मानबाई गोपाल पींडोरीया (सामत्रा), प.भ. जीगेश भावसार (अमदावाद), प.भ. साहिल महेन्द्रभाई पटेल (झुंडाल), प.भ. केवल चेतनभाई पटेल (पोर), प.भ. पटेल धर्मिष्ठाबेन सुरेशभाई (राणीप). **श्रावण वद-५** प.भ. गोपाल हरजी पींडोरीया (सामत्रा), प.भ. रमेशभाई मथुरदास पटेल (राणीप). **श्रावण वद-६** प.भ. विरेन्द्रकुमार ए. परीख (राजकोट), प.भ. तन्वीबेन रमेशभाई पटेल (झुंडाल), प.भ. जयाबेन कानजीभाई परीजीया (मोरबी), प.भ.अ.नि. श्यामबाई विश्राम हिराणी (कोडकी). **श्रावण वद-७** प.भ. रसिकलाल आर. शाह (बोटाद), प.भ. अ.नि. रनतभाई लालजी (मांडवी). **श्रावण वद-९** प.भ.अ.नि. वाघेला जामभा कानजीभा (गोधावी), प.भ. योगीबेन भाविनभाई पटेल (सावली), प.भ. भाविनभाई प्रमोदभाई पटेल (सावली), प.भ. पटेल लीलाबेन लालजीभाई (नारदीपुर), प.भ.अ.नि. मोहन लालजी वेकरीया (मांडवी), श्री क्रिष्ना ईन्फ्राकचर (मांडवी), प.भ. महेशभाई मंगळभाई पटेल (वहेलाल), श्री नरनारायणकृपा (मुंबई) (अमदावाद), प.भ. मित नरेशभाई सुहागीया (निकोल), प.भ. पटेल सूर्याबेन भरतकुमार (राणीप), प.भ.अ.नि. मुकेशभाई विठ्ठलभाई गोंडलिया (जेतपुर), प.भ. लालजी मनजी गाजपरीया (मांडवी), प.भ. जयंतिभाई बी. पटेल (साबरमती), प.भ.अ.नि. नाराण प्रेमजी हिराणी (मानकुवा), प.भ. मयंकभाई कामदार (पोरबंदर), प.भ. बिहोला दिग्पालसिंह भीखुभा (पालज), प.भ. पटेल गोविंदभाई अंबालाल (वडु), प.भ. पटेल दिपकभाई भक्तिभाई (वडु), प.भ. जयंतिभाई प्रहलादभाई (राणीप), प.भ. हितेशभाई सुखलालभाई (निकोल), प.भ.अ.नि. पारसकुमार विनुभाई (डेमाई), प.भ. विभुतीबेन निमेषकुमार पटेल (वडोदरा), प.भ. विमळाबेन रसिकभाई पटेल (उनावा). **श्रावण वद-१०** प.भ.अ.नि. नानजी करशन गाजपरीया (मांडवी), प.भ.अ.नि. गोविंदभाई खीमजीभाई (मेडा). **श्रावण वद-१२** प.भ. गौरीबेन दिपेनभाई पटेल (यु.एस.ए.), रंगमहोल श्री घनश्याम महाराज (बरोडा), प.भ. उषाबेन सुरेन्द्रभाई परमार (अमदावाद), प.भ. चौधरी राजेशभाई आर. (माणेकपुर), प.भ. रश्मिकाबेन संजयकुमार पटेल (झुंडाल), प.भ. मीनाबेन हरिकृष्णभाई (सुरत), प.भ. तुषारभाई भगवानभाई कथीरीया (राजकोट), प.भ. पटेल लीलाबेन दशरथभाई (राणीप), प.भ. कांतिभाई धनजी राबडीया (कच्छ), प.भ. पटेल शैलेषकुमार अमृतलाल (ईटादरा), प.भ. मनजी शीवजी हिराणी (नारणपर). **श्रावण वद-१३** नरनारायण हार्डवेर एन्ड पेईन्ट मार्ट (वस्त्राल). **श्रावण वद-१४** प.भ. पटेल कुंवरबेन केशवलाल (भावपुरा), प.भ. राजेश्वरी मनोज ब्रह्मभट्ट (अमदावाद), प.भ. जगदीशभाई कांतिभाई पटेल (लसुन्द्रा), प.भ. मालतीबेन सुरेन्द्रकुमार पटेल (सोजा), प.भ. पटेल नटुभाई तथा प्रहलादभाई (कल्याणपुरा). **श्रावण वद-३०** प.भ. ध्रुव जयेशभाई चौहाण (वलसाड), प.भ. योगेशभाई कांतिलाल सोनी (साणंद), प.भ. जीग्नेशभाई रमणभाई (करजीसण), प.भ. रसिकभाई राजाभाई झवेरी (अमदावाद), प.भ. प्रकाशभाई शंकरभाई पटेल (अमदावाद), प.भ. मनाली जीनल पटेल (अमदावाद).

श्री स्वामिनारायण मंदिर नारणपुरा अहमदाबाद • संपर्क : ७०४६७१२०००

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित।

सोकडा (मूली) मंदिर में श्रीमद् भागवत पारायण के अवसर पर सभा में आशीर्वाद देते प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री ।

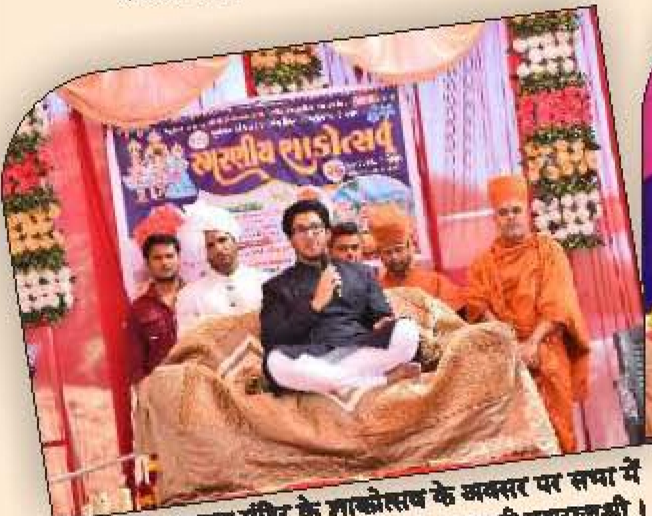

हळवद मंदिर के शाकोत्सव के अवसर पर सभा में आशीर्वाद देते प.पू. लालजी महाराजश्री ।

गवाडा में सभा को आशीर्वाद देते प.पू. लालजी महाराजश्री ।

कडी में विश्व शाकोत्सव के अवसर पर शाक बनाते प.पू. लालजी महाराजश्री ।

सुरेन्द्रनगर मंदिर के पाटोत्सव के अवसर पर सभा में आशीर्वाद देते प.पू. लालजी महाराजश्री ।

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at
Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/2021-2023
Issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2023

अहमदाबाद कालुपुर मंदिर में रंगमहोल घनश्याम महाराज के पाटोत्सव के अवसर पर अन्नकूट की आरती करते
प.पू. आचार्य महाराजश्री और ठाकुरजी का अभिषेक करते प.पू. लालजी महाराजश्री ।

श्री स्वामिनारायण भगवान द्वारा स्वयं प्रतिष्ठित किये नव मंदिर में से श्री स्वामिनारायण मंदिर मूली में बिराजमान
राधाकृष्णदेव श्री हरिकृष्ण महाराज के २०० वर्ष

मूली उत्सव

१० से १६ जनवरी - २०२३

श्री स्वामिनारायण मंदिर मूली, जि. सुरेन्द्रनगर

श्री स्वामिनारायण सम्प्रदाय के देश-विदेश के हरिभक्तो के आग्रह पर उनकी सुविधा के लिये आनलाईन डोनेशन
कालुपुर मंदिर की आफिसियल वेबसाइट पर नीचे दिये लिंक द्वारा कर सकते है ।
http://www.swaminarayan.in/donation

Praful Kharsani@gmail.com